22

क्रूस का भेद

रोमियों 16:25-27; कुलुस्सियों 1:25-28; 2:2, 3

''इस में संदेह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्थात वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया'' (1 तीमुथियुस 3:16)।

भेद को ''रहस्यमय'' (जैसे रहस्यमय समाधियों, कंपनों, टोनों या भूतनों) जैसा नहीं समझा जाना चाहिए। भेद या अन्धविश्वास का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है। लोगों को जादुई, अनोखी और सनसनीखेज बातें अच्छी लगती हैं। सच्चाई को समझने से अपनी जिज्ञासा को छेड़ना बहुत ही अच्छा लगता है। सुसमाचार के संदेश में परमेश्वर हमें सही प्रकार का भेद देता है। सरल और आत्मिक बातों में भेद रहता ही है (जैसे विवाह; इफिसियों 5:20-33)।

हम आसानी से उससे अधिक कह सकते हैं, जितना हमें समझ आ सकता है। ''भेद'' किसी ऐसी चीज़ को नहीं कहा जाता, जिसमें हमें जांच के लिए जासूस की आवश्यकता पड़े। ऐसा नहीं है कि इसमें कोई अर्थ नहीं है, बल्कि इसका अर्थ इतना बड़ा होता है कि हम उसे समझ नहीं सकते। किसी चीज़ को आप समझ नहीं सकते, इसका अर्थ यह तो नहीं है कि उसे समझा नहीं जा सकता। प्रेम, विश्वास न्याय या भलाई को पूरी तरह से कोई भी समझ नहीं सकता, परन्तु हम उन पर विश्वास करते हैं और उन्हें दिखाने की इच्छा करते हैं।

क्रूस परमेश्वर का सबसे बड़ा भेद है। एक छोटा बच्चा भी इसमें से पी सकता है, जबकि बुज़ुर्ग इस पर जीवन भर ध्यान लगा सकते हैं। फिर भी लोगों को इसका ''रत्ती भर'' भी पता नहीं है, इसके बावजूद कि हम इसकी अनन्त सच्चाई को समझ सकते हैं। भेद हमें चुनौती देता है और बढ़ने की अनुमति देता है।

धर्मसारों में भेद नहीं होता। भेद हमारी समझ का विरोध करता है और इसे समझना कठिन है। सनातन नियम मावनीय शब्दों से अधिक महत्व के होते हैं। हमें लगता है कि हमें पता है कि हम कौन हैं, पर अन्त में हमें पता चलता है कि हम अपने आप को धुंधले दर्पण में से देख रहे हैं! (देखें 1 कुरिन्थियों 13:12.) यह कह कर हम रोज़ हैरान होते हैं कि ''मुझे इसकी समझ कभी नहीं आएगी!'' पापी मनुष्य उन बातों में दृढ़ रहा है, जो निर्गुण होती हैं, परन्तु अनन्त महत्व की बातों में वह कमज़ोर ही है। हम भेद पर विजय नहीं पा सकते, परन्तु हम इसमें बढ़ते और इसे मनाते हैं।

भेद की समझ तर्क से नहीं, केवल प्रकाशन से होती है। परमेश्वर को जाना जा सकता है, परन्तु उसे नापा नहीं जा सकता। जब तक हमें परमेश्वर के क्रोध की समझ नहीं आती तब तक हम

उसके अनुग्रह को भी समझ नहीं सकते। जब तक हमें क्रूस की समझ नहीं आती तब तक हम मसीहियत को भी नहीं समझ सकते।

जहां भेद नहीं है वहां आश्चर्य नहीं है। जहां आश्चर्य नहीं है वहां सच्ची आराधना नहीं है। जब कोई जादू के ट्रिक को समझाता है तो उसे लगता है कि अब बताने वाली कोई बात नहीं बची है, परन्तु जब हम परमेश्वर के भेद को मान लेते हैं तो हमें सब कुछ मिल जाता है!

भेद पूर्वी या पश्चिमी धर्म में नहीं ढूंढ़े जाते। भेद केवल ईश्वरीय प्रकाशन से ही मिलता है। भेद एक सनातन रहस्य है, जिसे केवल परमेश्वर ही खोल सकता है। सच्चाई जो किसी समय गुप्त थी और अब प्रकट की गई है। गुप्त बातें परमेश्वर की ही हैं ... परन्तु वे हम पर प्रकट की गई हैं। परमेश्वर के भेद में जाने के लिए हम ''आरम्भ करने वाले'' या ''गुप्त हाथ मिलाने वाले'' से परिचित नहीं होते।

पौलुस ने कहा कि सुसमाचार का संदेश एक भेद है (इफिसियों 6:19)। शुद्ध विवेक में रहने के लिए विश्वास एक भेद है (1 तीमुथियुस 3:9)। मसीह में छुटकारा वह भेद है, जो यहूदियों और अन्यजातियों का उद्धार करता और उन्हें मिलाता है (इफिसियों 1:7-13)। पौलुस ने कहा कि मसीह की सच्चाई संसार की सृष्टि के समय से गुप्त रखी गई थी (रोमियों 16:25, 26; 1 कुरिन्थियों 2:7)। यह भेद ''विश्वास के आज्ञापालन के लिए'' था (रोमियों 1:5; NKJV)। प्रकाशन से मिला भेद हमें बताता है कि क्या विश्वास करना है और क्या आज्ञा माननी है। आत्मा ने अपने पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा अनुग्रह का यह भेद प्रकट कर दिया है (इफिसियों 3:2-6)। यह सच्चाई, यह एकता पहले प्रकट नहीं की गई थी। पौलुस ने भी ''मसीह और कलीसिया'' को ''बड़ा भेद'' बताया (इफिसियों 5:32)। यह विवरण उसने पतियों और पत्नियों तथा विवाह की गहराई के विषय में दिया (इफिसियों 5:21-33)। सब सुन्दर वस्तुएं, जीवन की बड़ी बातों में भेद ही तो है।

सच्चाई के बड़े प्रकाशनों में से एक इफिसियों 3:9-11 में मिलता है। परमेश्वर ने हर चीज़ मसीह के लिए और मसीह में बनाई। परमेश्वर ने सृष्टि की रचना से पहले अपने मन में क्रूस ही बनाया। मसीह ने क्रूस पर उसकी योजना को सिरे चढ़ाया। उसके लहू ने क्रूस को खरीदा (प्रेरितों 20:28)। अब परमेश्वर की ना ना प्रकार की बुद्धि केवल मसीह में और उसकी कलीसिया के द्वारा दिखाई गई है। यह परमेश्वर का सनातन उद्देश्य है। भेद के लिए बिना पूरी जानकारी के आज्ञा मानना आवश्यक है। हमारे लिए बाइबल की स्पष्ट सच्चाइयों पर भरोसा रखकर उनकी बात मानना और हर रोज़ वचन के ज्ञान में बढ़ना आवश्यक है। हमें इतना पता होना आवश्यक है कि यदि समझ न आ सके तो हम उससे इनकार न करें।

महान जीवन के लिए बड़े भेद का होना आवश्यक है! हमारी धुन उन इतनी अद्‌भुत बातों पर ध्यान लगाने की होनी चाहिए, जिन्हें हम पूरी तरह से समझ नहीं सकते। जैसे ''मसीह का वह भेद ... जो और और समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया है'' (इफिसियों 3:4, 5)।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!